Lapis Lazuli
An International Literary Journal

UGC APPROVED, BLIND PEER-REVIEWED
ISSN 2249-4529

WWW.PINTERSOCIETY.COM
VOL.7 / NO.1/ SPRING 2017

TRANSLATED POETRY: TANU SHARMA

My friend, PhD, and Dalit Literature

" 'What is happening to my country?

People like you are splitting this country, annihilating

This nation

Is this *even* a topic for a PhD- 'Dalit Fiction'

A curious scorn was this

My friend met with in an English professor selection interview

Board

Of the *revered* noble class belonging VC of an esteemed university.

The tirade didn't stop here

In fact, he interjected garrulously like an express train

"Literature is literature, my child

Where did 'Dalit' come from…

Tomorrow You will bring-

Dalit Mathematics

Dalit Science

 ISSN 2249-4529

Dalit Geography

And Dalit – what not?

The Ambedkar you venerate

Was a traitor, determined to divide the country

Poor Gandhi! In the name of Partition earned

Ignominy

When the real villain was Ambedkar."

My friend contemplates

About her PhD topic

About her on going PhD

To change or to leave

PhD, PhD which has become a punishable crime!

My friend, a Brahmin girl,

Intends to divide the country?, ruminates the fact,

Purposefully annihilate the country, muses on

Deeds of transpired past have survived through the present

My efforts intend to not let the future be marred

Really, writing-reading about Dalits is a crime in this country?

I discerned a difference between the two

The One says 'My Country', my friend says 'Ours'

Possibly this is the only difference between yesterday's stench and today's essence.

Original in Hindi By- Surendra Zinsi

मेरी दोस्त, पीएचडी और दलित साहित्य

" 'मेरे' देश को क्या हो रहा है ?
तुम देश का विभाजन कर रहे हो,सत्यानाश कर रहे हो
यह भी कोई विषय हुआ पीएचडी का - 'दलित साहित्य'

यह एक अजीब सी आह -थू थी
मेरी दोस्त के अंग्रेजी प्रोफ़ेसर के साक्षात्कार बोर्ड में
एक निजी विश्विद्यालय के उच्च कुल के कुलपति की ।

वह इतना ही कहकर नहीं रुका
बल्कि कहने की एक रेलगाड़ी दौड़ा दी ।

"साहित्य तो साहित्य होता है
ये दलित कहाँ से आगए साहित्य में
कल के दिन तुम्हारे जैसे -
दलितों का गणित भी लेकर आएंगे
दलितों का विज्ञान भी लेकर आएंगे
दलितों का भूगोल भी लेकर आएंगे
दलितों का न जाने क्या-क्या लाएंगे ?
जिस अम्बेडकर को तुम महान समझते हो
वह गद्दार था, वह देश का बंटवारा चाहता था
गाँधी जी तो बंटवारे के नाम और मुफ्त में बदनाम हुए
असली खलनायक तो अम्बेडकर था ।"

मेरी दोस्त सोचती है कि
मुझे अपनी पीएचडी का विषय बदल लेना चाहिए
मुझे अपनी चली आ रही पीएचडी छोड़ देनी चाहिए
पीएचडी करना जैसे मेरे लिए बहुत बड़ा गुनाह हो गया ।

मेरी दोस्त एक ब्राह्मण लड़की है
वह सोचती है कि मैं क्या देश का विभाजन करूंगी
मैं क्या उसका सत्यानाश करूंगी
जो होना था वह तो आजतक चला आ रहा है
मेरे जैसों की कोशिश है कि वह कल नहीं होना चाहिए
क्या दलित पर लिखना-पढ़ना 'हमारे' देश में गुनाह है ?

मैंने दोनों की सोच में फर्क महसूस किया
एक कहता है 'मेरा' देश, मेरी दोस्त कहती है 'हमारा' देश
शायद यही फर्क है कल की गंध में, और आज की सुगंध में ।

- सुरेन्द्र जिन्सी

 ISSN 2249-4529

Tanu Sharma is currently pursuing her Ph.D. from Jamia Millia Islamia, New Delhi. She has completed her M.A. and M.Phil. English from Department of English, University of Delhi. She also works as an Assistant Professor of English at PGDAV Morning College, University of Delhi.

reachtanu1990@gmail.com